अनुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ
	प्रथम अध्ययन के प्रथम उद्देश	
१	मङ्गला चरण	१–१०
२	ज्ञानका मङ्गलत्व का प्रतिपादन	११–१५
३	बन्धके स्वरूपका निरूपण	१६–२१
४	परिग्रह के स्वरूपका निरूपण	२२–२६
५	प्रकारान्तर से बन्धके स्वरूपका निरूपण	२७–३४
६	कर्मबन्धसे निर्वृत्तिका निरूपण	३५–३७
७	स्वसमयमें प्रतिपादित अर्थका कथन–करने के पश्चात् परसमयमें प्रतिपादित अर्थ का कथन	३८–४३
८	चार्वाक मत के स्वरूपका कथन	४४–१४१
९	वेदान्तियों के एकात्मवादका निरूपण	१४२–१४५
१०	अद्वैतवादियों के मत का खंडन	१४८–१५०
११	तज्जीव तच्छरीरवादियों के मतका निरूपण	१५१–१५९
१२	पुण्य और पाप के अभावका निरूपण	१६०–१६८
१३	अकारकवादी–सांख्यमतका निरूपण	१६९–२०३
१४	अकारकवादियों के मतका खण्डन	२०४–२०५
१५	पृथिवी आदि भूतों के और आत्माका नित्यत्व	२०६–२११
१६	क्षणिकवादि बौद्धमत का निरूपण	२१२–२२२
१७	चतुर्धातुवादी बौद्धमत का निरूपण	२२३–२३९
१८	चार्वाकसे लेकर बौद्धपर्यन्त के अन्यमत-वादियों के मतका निष्फलत्वका प्रतिपादन	२४०–२५३
	दूसरा उद्देशा	
१९	मिथ्यादृष्टि नियतवादियों के मतका निरूपण	२५४–२७५
२०	नियत्यादि अन्यमतवादियों को मोक्षप्राप्ति का अभाव का कथन	२७६–२७९
२१	अज्ञानवादियों के मतका निरूपण में मृगका दृष्टान्त	२८०–२८५
२२	पाशमें बंधेहुए मृगकी अवस्थाका निरूपण	२८६
२३	असम्यक् ज्ञान के फलप्राप्तिका निरूपण	२८७–२९०

२४	शंकितधर्म और अशंकित धर्म की भिन्नता का कथन	२९१
२५	अज्ञानि पुरुषको अप्राप्तपदार्थ का निरूपण	२९२–२९४
२६	अज्ञानियोंके दोषों का निरूपण	२९५
२७	अज्ञानवादियों के मतका निरसन	२९६–२९७
२८	अज्ञानवादियों का मत दिखाते हुए सूत्रकार म्लेच्छके दृष्टान्त का कथन करते हैं	२९८–२९९
२९	दृष्टान्त का कथन करके सिद्धांतका प्रतिपादन	३००–३०२
३०	अज्ञानवादियों के मत के दोषदर्शन	३०३–३०६
३१	ये अज्ञानवादी अपने को या अन्यको बोधदेनेमें समर्थ नहीं होने का दृष्टान्त के द्वारा कथन	३०७–३०८
३२	अज्ञानवादियों के विषयमें अन्य दृष्टान्तका कथन	३०९
३३	दृष्टान्त कहकर दार्ष्टान्तिक–सिद्धांतका प्रतिपादन	३१०–३११
३४	फिरसे अज्ञानवादिके मतका दोषदर्शन	३१२–३१३
३५	अज्ञानवादियों को होनेवाले अनर्थका निरूपण	३१४–३१६
३६	एकान्तवादियोंके मत का दोष कथन	३१७–३१९
३७	क्रियावादियोंके मत का निरूपण	३२०–३२२
३८	क्रियावादियों के कर्म रहितपना	३२३–३२८
३९	प्रकारान्तर से कर्मबन्ध का निरूपण	३२९–३३२
४०	कर्मबन्ध के विषयमें पितापुत्र का दृष्टान्त	३३३–३३४
४१	कर्मबन्ध के विषयमें आर्हत मतका कथन	३३५–३३९
४२	ये क्रियावादियों के अनर्थ परंपरा का निरूपण	३४०–३४१
४३	क्रियावादीयों के मत का अनर्थ दिखानेमें नौकाका दृष्टान्त	३४२–३४२
४४	दृष्टान्त के द्वारा सिद्धान्तका प्रतिपादन	३४३–३४५
	तीसरा उद्देशा—	
४५	मिथ्यादृष्टियों के आचारदोषका कथन	३४६–३४८
४६	आधाकर्मी आदि आहार को लेनेवालेके विषयमें मत्स्य का द्रष्टान्त—	३४९–३५१
४७	दृष्टान्त कहकर सिद्धांत का प्रतिपादन	३५२
४८	जगत् की उत्पत्ती के विषयमें मतान्तर का निरूपण	३५३–३६९
४९	देवकृत जगद्वादियों के मतका निरसन	३७०–३८०

५०	अन्यमतावलंबियों के फल प्राप्तिका निरूपण	३८१–३८५
५१	प्रकारान्तरसे देवोप्तादियों के मतका निरूपण	३८६–३९०
५२	त्रैराशिकों के मतका निरसन	३९१–३९२
५३	प्रकारान्तरसे कृतवादियों के मतका निरूपण	३९३–३९६
५४	रसेश्वरवादियों के मतका निरूपण	३९७–३९९
५५	रसेश्वरवादिके मतके अनर्थताका कथन	४००–४०१
	चौथा उद्देशा	
५६	पूर्वोक्तवादियों के फलप्राप्तिका निरूपण	४०२–४०७
५७	पूर्वोक्तवादियों के प्रति विद्वानों का कर्त्तव्य	४०८–४१०
५८	साधुओं के जीवनयात्रा निर्वाह का निरूपण	४११–४१३
५९	उद्गम आदि दोषोंका निरूपण	४१७–४१८
६०	सोलह प्रकार के उत्पादनादोषका निरूपण	४१९–४२१
६१	शंकित आदि दशप्रकार के दोषों का निरूपण	४२२–४२४
६२	ग्रासैषणा के पांच दोषों का निरूपण	४२५–४२६
६३	पौराणिकादि अन्यतीर्थिकों के मतकानिरूपण	४२७–४२८
६४	विपरीत बुद्धि जनित लोकवाद का निरूपण	४२९–४३५
६५	अन्यवादियों के मतका खण्डन के लिये अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन	४३६–४४४
६६	अन्यवादियों के मत के खण्डन में दृष्टान्त का कथन	४४५–४४७
६७	जीवहिंसा के निषेध का कारण	४४८–४५१
६८	मोक्षार्थि मुनियों को उपदेश	४५२–४५३
६९	साधुओंके गुणका निरूपण	४५४–४५६
७०	अध्ययन का उपसंहार	४५७–४६१
	दूसरा अध्ययन का पहला उद्देशा	
७१	दूसरे अध्ययनकी अवतरणिका	४६२
७२	भगवान् आदिनाथने स्व पुत्रोंको दियाहुआ उपदेशवचन	४६३–६२६
	तीसरा उद्देशा	
७३	साधुओं को परीषह एवं उपसर्ग सहनेका उपदेश	६२७–६८८
	द्वितीयाध्ययनपर्यन्तका प्रथमभाग समाप्त ॥२–३॥	